हिंदी : हिन्दुस्तान के भाल की बिंदी

कृषि मञ्जूषा पत्रिका के द्वितीय वर्ष का प्रथम अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। यह अंक पूर्व के अंकों की भाँति ज्ञानवर्धक एवं रोचक जानकारियों से भरपूर है। आवरण कथा जैवगतिशील खेती पर आधारित है, जो कि वैदिक कालीन कृषि परम्परा है। यह लेख "वैदिक कृषि का वैज्ञानिक स्वरूप : जैवगतिशील कृषि" नामक पुस्तक से साभार लिया गया है, जिसे वर्ष 2018 में भारत सरकार के राज भाषा विभाग द्वारा हिंदी में मौलिक लेखन के लिए पुरस्कृत किया गया था। हैप्पी सीडर पर शोधपरक व कृषकोपयोगी जानकारी दी गयी है। बकरियों में होने वाले मुख्य रोग एवं उनके निदान पर सारगर्भित लेख भी सम्मिलित है। सस्य विज्ञान के महत्व को रेखांकित करता हुआ आलेख भी इस अंक मे शामिल है। कृषि मञ्जूषा गीत इस पत्रिका के विषय वस्तु पर प्रकाश डालता है।

अतः मित्रों सितम्बर माह में हिंदी दिवस मनाया जाता है, क्योंकि इस बार की संपादकीय जन जन की भाषा हिंदी को समर्पित है। 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा का स्थान प्राप्त हुआ था क्योंकि ठीक ही कहा गया है कि...

'निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल। बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल'।।

यह बात भी शत प्रतिशत सही है, कि विदेशी भाषा का प्रयोग पराधीनता की निशानी है एवं परतंत्रता की अवस्था में सुखी जीवन की कल्पना सपने में भी नहीं की जा सकती है :

भाषा का प्रयोग मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान करने के लिए करता है। यह संवाद स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। अमेरिकन विचारक श्री वॉल्टर केनिंग ने ठीक ही कहा था कि विदेशी भाषा का किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की राज-काज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक पराधीनता है। भारत देश बहुभाषी है, यही कारण है कि भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। हिंदी भारत वर्ष के बहुसंख्यक लोगों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा के साथ-साथ देश की एकमात्र संपर्क भाषा भी है, जिसकी लिपि देवनागरी है। राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में "हमारी देवनागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।" हिंदी में अन्य भाषाओं के शब्दों को सरलता से आत्मसात करने की अपार शक्ति है। हिंदी का पक्ष रखते हुए गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि प्रांतीय बोलियाँ, अपने घर या प्रांत में रानी बनकर रहें, परन्तु आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य-मणि हिंदी भारत-भारती होकर विराजती रहे। मुझे यह कहने में जरा सा भी संकोच नही है कि वर्तमान सरकार के कार्यकाल में ही राजभाषा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व संस्था की मान्य भाषाओ में नाम अंकित होने का गौरव प्राप्त होगा। प्रस्तुत है कविवर डॉ. आशुतोष उपाध्याय, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना द्वारा रचित राजभाषा हिंदी के महत्त्व को उजागर करती हुई कविता की कुछ पंक्तियाँ -

हिन्दी है भारत की आत्मा, एकता, अखंडता का मूल मंत्र।
हिन्दी सद्भावना की जननी, होता सशक्त इससे गणतंत्र।।
हिन्दी ही नदी प्रेम की है, भावों की इसमें गहराई है।
सूर, कबीर, तुलसी, जायसी ने, इसमें डुबकी लगाई है।
हिन्दी में प्रेम, दया, करुणा, त्याग, परोपकार और स्वाभिमान।
हिन्दी विनम्र, शालीन, सुसंस्कत, न होने दें इसका अपमान।।
जैसे नहीं सुशोभित होती, विधवा के माथे पर बिन्दी।
वैसे ही मुख सूना लगता, जब न बोले कोई हिन्दी।।
बोलें और सीखें हिन्दी को, है इसमें काम करना आसान।
राष्ट्र का गौरव बढ़ाना है, तो देना होगा इसको सम्मान।।
कोई भाषा बुरी नहीं है, अच्छी हैं सब भाषाएँ।
पर हिन्दी अपनी भाषा है, क्यों न इसको अपनाएँ।
हिन्दी दिवस, सप्ताह, मास, हर साल मनाना होगा।
देकर इसको सम्मान देश का, मान बढ़ाना होगा।

हिन्दी पर्व की ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ।

(अनिल कुमार सिंह)
प्रधान संपादक